अजायब बानी

मासिक पत्रिका मार्च–2023

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष–बीसवां	अंक–ग्यारहवां	मार्च–2023

गुरु की शरण में जाएं 3
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सवाल-जवाब 23
प्रेमियों के सवालों के जवाब

इंसानी जामा एक हीरा 29
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

भजन-अभ्यास 31
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

धन्य अजायब 32
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

भजन माला 2022 33
नये शब्द

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 252 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु की शरण में जाएं

स्वामी जी महाराज की बानी 10 जनवरी 1992 मुम्बई, महाराष्ट्र

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में बारम्बार नमस्कार है। वे संसार में हमारी बिगड़ी हुई तकदीरों को सँवारने के लिए बीमारियों का तन धारण करके आए,उन्होंने हमारे ऊपर नाम की बारिश की। कबीर साहब कहते हैं:

मुझमें इतनी शक्ति कहाँ गाऊँ गला पसार
बंदे को इतनी भली पड़ा रहे दरबार

शुरु–शुरु में गुरु के ऊपर यकीन आना मुश्किल होता है, जब हम रोज–रोज उनके दिए हुए 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं और जैसे–जैसे अंदर जाते हैं तो हमारे अंदर से शक–शकूक दूर होते जाते हैं। हम यह कहते थे कि हम गुरु के पास जाकर ये बातें करेंगे लेकिन सच्चाई यह है जिन्हें गुरु की, नाम की समझ आ गई उन्होंने यही कहा कि मुझमें यह ताकत नहीं कि मैं तेरी बड़ाई कर सकूँ, लम्बे–चौड़े भाषण दे सकूँ या कीर्तन करके लोगों को सुना सकूँ कि मैं आलिम–फाजिल हूँ। मैं तो श्रद्धा से यही कह सकता हूँ कि बंदे के लिए इतना ही काफी है कि वह गुरु के दरबार में, गुरु के चरणों में सिर झुकाकर रखे क्योंकि बिगड़ी हुई तकदीर को बनाने वाला गुरु ही है।

प्यारेयो, हम अपनी तकदीरें किस तरह बिगाड़ते हैं? सब सन्त बताते हैं कि हम कर्म भूमि में उतरे हुए हैं। क्रियमान, संचित और प्रालब्ध तीन प्रकार के कर्म होते हैं। क्रियमान वे कर्म हैं जो हम आज कर रहे हैं। संचित वे कर्म हैं जो हम करते ज्यादा और भोगते कम हैं, उनका स्टॉक त्रिकुटी (ब्रह्म) में जमा होता रहता है। प्रालब्ध वे कर्म हैं जो हम मस्तक में लिखवाकर लाए हैं, जिन्हें भोगने के लिए हम बेबस हैं।

हम इस उदाहरण से अच्छी तरह समझ सकते हैं जिस तरह जमींदार लोग खेती करते हैं, उनके घर फसल आ जाती है। जमींदार लोग उसमें से अपना कारोबार चलाते हैं, खा लेते हैं, उसमें से कुछ बचत कर लेते हैं। जो बचत करते हैं, वह स्टॉक साहूकार के पास जमा होता है। जब कभी खेती की पैदावार नहीं होती तो जो स्टॉक साहूकार या बैंक के पास होता है वह उसमें से लेकर अपना गुजारा कर लेते हैं।

इसी तरह हमारे कर्मों का यह सिलसिला चलता रहता है अगर हम अपने क्रियमान कर्मों को सुधार भी लें तो जो स्टॉक ब्रह्म में है, काल उस स्टॉक में से कर्म लेकर फिर संसार में भेज देता है। हम अपने प्रालब्ध कर्मों को भोगने के लिए बेबस हैं। सन्तों का संसार में सदा ही यह होका रहा है, ''आओ, चलो सच्चाई को खुद देखो।''

जब हम लोग उनके साथ जाने के लिए तैयार नहीं होते, मन का साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते तो सन्त हमें दुनियावी कथा-कहानियाँ सुनाकर समझाना शुरु करते हैं। वे अपनी सूक्ष्म बुद्धि से हमें हिलोना सा भी देते हैं तो हमारे अंदर खोज शुरु हो जाती है, तड़प पैदा हो जाती है आखिर हमारे भूले हुए मन को होश आ जाती है।

सन्त हमें बताते हैं कि आपने पीछे जो बीज बोया था वह तो आप खाने के लिए मजबूर हैं। मिर्च बोते हैं तो मिर्च खाने के लिए मजबूर हैं। ईख बोते हैं तो ईख खाने के लिए मजबूर हैं। हमें पता है कि ईख के रस से गुड़ बनता है, चीनी बनती है, चीनी मीठी होती है। मिर्च का जायका कड़वा होता है, जायके तो हमें दोनों ही चखने पड़ते हैं।

सन्त हमें प्यार से बताते हैं कि प्यारेयो, अगर हम नेक कर्म करते हैं तो हम संसार में सेठ-साहूकार बनकर आ जाते हैं। ऐसा नहीं कि काल हमें नेक कर्मों का फल नहीं देता वह फल जरूर देता है। काल किसी हद तक स्वर्ग-बैकुंठ भी देता है, काल कुछ अर्से के लिए मुक्ति भी दे देता है।

वेद–शास्त्रों में आता है कि मुक्ति भी कल्पपर्यन्त है, वह जब खत्म हो जाती है तो फिर संसार में आना पड़ता है, वहाँ भी भोग योनियाँ है। आज तक हमारा यह सिलसिला खत्म नहीं हुआ। आगे हम सोच–समझकर फसल बोएं क्योंकि आगे ये फल हमने खुद ही खाना है। अच्छा भी हमने खाना है और बुरा भी हमने ही खाना है। हम यह कभी नहीं सोचते कि कर्मों की कैद के सिलसिले को हमने किस तरह खत्म करना है।

हर समाज के लोग परमात्मा से मिलना चाहते हैं, परमात्मा को देखना चाहते हैं लेकिन हमें किसी समाज में ऐसा कोई आदमी नहीं मिलता जो यह कहे कि मैंने परमात्मा को इन बाहरी आँखों से देख लिया है, उसके साथ बात कर ली है। यहाँ सवाल पैदा होता है कि जिस परमात्मा को हमने देखा नहीं, जिसके साथ हमारी जिंदगी में कोई बात नहीं हुई, जिसका कोई भाई–बंधु या शरीक नहीं, उससे हम किस तरह मिल सकते हैं?

आजकल के जमाने में हम सबके हक–हकूक एक जैसे हैं। सारी रचना पाँच तत्वों की बनी हुई है। इंसान, इंसान को नहीं पूजता। इंसान, इंसान के साथ नफरत करता है। हम सोचते हैं कि पाँच तत्व इसमें हैं और पाँच तत्व ही मेरे अंदर हैं, मैं इसकी पूजा क्यों करूँ? यहाँ आकर सारी ही दुनिया नास्तिक हो जाती है, प्रभु के अस्तित्व को नहीं मानती।

सन्त हमें बताते हैं कि इस मसले को हल करने के लिए हमें ऐसे महात्मा की जरूरत पड़ती है जो परमात्मा से जुड़ा हुआ है। जिस तरह एक कमरे में बैटरी और टेलीविजन रखा है लेकिन उस टेलीविजन का न बैटरी के साथ कनेक्शन है और न बिजली के साथ कनेक्शन है, वह टेलीविजन हमें किसी मुल्क की खबर नहीं दे सकता। हम वाकिफकार नहीं कि इसे किस तरह जोड़ना है क्योंकि हमने वह तालीम हासिल नहीं की, मैकेनिक का काम नहीं सीखा। जब कोई मैकेनिक टेलीविजन का बैटरी या बिजली के साथ कनेक्शन कर देता है तो हम उसी टेलीविजन सेट से खबरे सुनते

हैं और रंग–बिरंगी तस्वीरें भी देखते हैं। फिर हमें पता लगता है कि इस सेट से हम तभी फायदा उठा सकते थे अगर इसका कनेक्शन बैटरी या बिजली के साथ हो जाता। टेलीविजन सेट तो हमारे घर के अंदर ही था और बिजली भी हमारे घर में थी लेकिन हमें उसके साथ जोड़ना नहीं आता था, यह सब मैकेनिक की मेहरबानी से हुआ।

हमने महात्मा के पास किसलिए जाना है? महात्मा ने हमारे अंदर कुछ घोलकर नहीं डालना। परमात्मा ने बैटरी और टेलीविजन सेट हर एक को दिया हुआ है लेकिन हम उसे जोड़ नहीं सकते। हम महात्मा के पास इसलिए जाते हैं क्योंकि महात्मा परमात्मा की तरफ से भेजे हुए मैकेनिक होते हैं। वे सेट का बैटरी के साथ कनेक्शन करना जानते हैं। जब हमारे सेट का कनेक्शन हो जाता है तो हम किसी भी मंडल की खबर सुन सकते हैं, देख सकते हैं। हमें यह छह फुट का सेट मिला है, जब तक हमें मैकेनिक नहीं मिलता तब तक हम इससे फायदा नहीं उठा सकते।

सन्त हमें यह नहीं कहते कि आप घर–बार, बेटे–बेटियाँ छोड़ दें, समाज बदल लें। वे कहते हैं कि आप अपने–अपने समाज में रहें, अपनी–अपनी बोलियाँ बोलें, हमारा आपके बाहरी रीति–रिवाज से कोई संबंध नहीं लेकिन हम आपको जो तालीम बताते हैं अगर आप वह करेंगे तो आप भी कर्मों का हिसाब–किताब आसानी से चुका देंगे। उसे जुकात, टैक्स या महसूल (लगान) कह लें।

हम सभी यहाँ अपने कर्मों का भुगतान करने के लिए आए हैं। जब महात्मा हमारे सेट को बैटरी के साथ जोड़ देते हैं तब हम सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से ऊपर उठ जाते हैं, अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे उतार देते हैं। आत्मा के ऊपर पर्दे इस तरह चढ़े हुए हैं जिस तरह एक पिंजरे में दूसरा और दूसरे में तीसरा पिंजरा है।

महाराज जी मिसाल देकर समझाया करते थे कि जिस तरह गैस जल रहा है लेकिन उसके ऊपर बहुत से टाट के पर्दे चढ़े हुए हैं तो कमरे में अंधेरा है। जब हम युक्ति से पर्दे उतार देते हैं तो कमरा रोशनी से भर जाता है। इसी तरह हमारी आत्मा उस नूर की बच्ची है लेकिन यहाँ पर्दों में अपने प्रकाश को गुम कर बैठी है। जब हम आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं, उस जगह पहुँचकर हमें सुरत आती है कि ओह! मैं आज तक भूली रही, मैं जाति–पाति का मान करती रही लेकिन मेरी वही जाति है जो परमात्मा की जाति है।

जब हम पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो हमारे सारे कर्मों का स्टाक खत्म हो जाता है। सेवक का जप–तप, पूजा–पाठ सारा ही हो जाता है, हाथी के पाँव में सबके पाँव आ जाते हैं। अपने कर्मों का भुगतान करने की यही सबसे अच्छी युक्ति है। हम बाहर थोड़ा बहुत पढ़कर नेक–पाक जीवन भी बना लेते हैं लेकिन पहले अंदर जो गंद भरा हुआ है उसे निकालना भी जरूरी है। आप ऐसे **गुरु की शरण में जाएं** जो परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है। महाराज जी कहा करते थे, ''जुड़ा हुआ ही जोड़ सकता है, पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है।''

जद ही नाम हृदय धरयो, भयो पाप का नाश।
मानो चिड़गी घास की बड़ी पुरानी घास।

कबीर साहब कहते हैं, ''देखो भई प्यारेयो, चाहे हमारे कितने भी बुरे कर्म थे लेकिन जब हमारे दिल के अंदर नाम बस जाता है, हम नाम का आसरा ले लेते हैं, नामरूप **गुरु की शरण में** चले जाते हैं तो हमारे सारे ही कर्म राख की तरह स्वाह हो जाते हैं।'' गुरु रामदास जी महाराज कहते हैंः

महा उग्र पाप साकत नर कीने मिल साधू लूकी दीजै

बेशक हम कितने भी पापी हैं, बुरे हैं अगर हम नाम की कमाई में लग जाते हैं, नाम के प्रताप को समझ जाते हैं तो हमारे कर्मों का स्टाक भी

राख हो जाता है। जिस तरह आग की एक चिंगारी लकड़ियों के सारे ढेर को राख बना देती है। महात्मा की संगत में आकर बड़े–बड़े चोर–डाकू बुराई छोड़ देते हैं।

इतिहास गवाह है कि गुरु हरगोबिंद के पास बिधिचंद और गुरु नानकदेव जी के पास भूमिया चोर आए। पुलिस ने तहकीकात की कि हमें शिकायत मिली है कि आपके पास चोर–डाकू हैं। गुरु साहब ने कहा, ''पहले ये चोर होंगे लेकिन अब तो ये महात्मा बने हुए हैं, नाम की कमाई करते हैं, अब कोई शिकायत है तो बताएं।''

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी के वक्त का वाक्या है कि उस समय वहाँ उधम सिंह एक नामी डाकू था। वह महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए जाने वालों को पकड़कर दरिया में गोते दिया करता था। वह जब महाराज सावन सिंह जी से मिला, आँखे चार हुई बुरे कर्मों का प्रभाव टल गया, उसके बाद वह अपने मुँह के ऊपर कपड़ा डालकर संगत में खड़ा होकर महाराज सावन सिंह जी का यश गाता था। महाराज जी कहते, ''अब तू बस कर।'' वह कहता कि मैंने जिस जुबान से आपकी निन्दा की है अब उसी जुबान से आपकी प्रशंसा करके इसे धो रहा हूँ।

इसी तरह का एक वाक्या है कि एक डाकू के पीछे पुलिस आ रही थी, वह महाराज जी की रिहायशगाह के आँगन में आकर छिप गया। महाराज जी ऊपर से देख रहे थे, आँखों से आँखें मिली। जब उस सज्जन का अंत समय आया तो घर के लोग पूछने लगे कि बता क्या हाल है? उसने कहा, ''क्या बताऊँ अंदर बहुत बहस छिड़ी हुई है कि इसने बहुत अत्याचार किए हैं, लोगों को लूटकर खाया है, हम इसे लेकर जाएंगे यह हमारी आत्मा है लेकिन मैंने जिंदगी में जिस महात्मा का दर्शन किया था, वह महात्मा भी मुझे लेने के लिए आ गए हैं उन्होंने मेरा सारा हिसाब खत्म कर दिया है।''

आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। आप कहते हैं कि अगर आप अपने कर्मों का हिसाब खत्म करना चाहते हैं तो सबसे पहले किसी गुरु की शरण में जाकर नाम की कमाई करें जिससे आपको जप–तप, पूजा–पाठ सबका फल मिले। जब हम नाम के साथ जुड़ जाते हैं तो सोते–जागते हमारी जुबान पर सिमरन चढ़ जाता है, इससे बढ़कर और कौन सा वैराग्य हो सकता है, कौनसा तप हो सकता है, कौन सा त्याग हो सकता है? हम नाम के रस को पाकर, अंदर जाकर विषय–विकारों से मुँह मोड़ लेते हैं। घर–बार, बाल–बच्चों को छोड़कर जंगलों–पहाड़ों में छिप जाने से त्याग नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

देस छोड परदेस धाइया, पंच चंडाल नाले लै आया

हम घर छोड़कर मंदिर–मस्जिदों में जाकर बैठ जाते हैं, ये पाँचों डाकू काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे साथ ही होते हैं। जहाँ ये हैं वहाँ कैसा त्याग है? स्वामी जी महाराज का शब्द गौर से सुनने वाला हैः

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे। कर्म जगात चुकाय।।

हम कर्मों का हिसाब–किताब गुरु की शरण में जाकर ही चुका सकते हैं, गुरु हमें अंदर जाने का साधन और तरीका बताते हैं। सन्त हमें नाम देते हैं, वे हमारे हाल पर तरस करते हैं और हमें हौंसला भी देते हैं। हमारा दिल भी बँधाते हैं और अंदर मदद करते हैं। वे हमारे हाल पर आँसू भी बहाते हैं लेकिन हम न तो उनकी सलाह को मानते हैं, न उनकी हमदर्दी को ही समझते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक

हम दिन–रात जो कुछ सतसंग में सुनते हैं न उस पर अमल करते हैं, न उनकी हमदर्दी को समझते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

पाप कमांवदया तेरा कोइ न बेली राम

प्यारेया, तेरा कौन साथी है, यह फैसला तू खुद कर ले क्या माता-पिता, भाई-बहन तेरे साथ जाएंगे, तेरा बोझ हल्का कर देंगे? हम जिस शरीर में बैठे हैं यह भी हमारे साथ नहीं जाता, दुनिया के रिश्ते आरजी(अस्थायी) हैं हम इनकी क्या मुनियाद समझ बैठे हैं? महाराज जी कहा करते थे, ''कोई ऐसा है जो यह कहे कि मैं इसके कर्म उठाने के लिए तैयार हूँ क्योंकि कर्म तो हम अपने ही नहीं उठा सकते।''

चाहे पापी है या पुन्नी है, सन्त 'शब्द-नाम' के साथ, परमात्मा की आवाज के साथ जोड़ देते हैं। जेन्टलमैन का कपड़ा थोड़े से इशारे से साफ हो जाता है लेकिन तेली-हलवाई का कपड़ा ज्यादा मेहनत लेता है। सन्तों को अपने नाम पर, गुरु पर भरोसा होता है। कबीर साहब कहते हैंः

जा तिस भावै ता हुकम मनावै, इस बेड़े को पार लघावै

सन्त जीवों को अपने साथ नहीं जोड़ते वे गुरु के साथ, नाम के साथ जोड़ते हैं। यह देह एक कपड़ा है, असली गुरु 'शब्द-नाम' है। सन्त 'शब्द-नाम' में से आते हैं, जब तक प्रभु का हुक्म होता है नाम का प्रचार करके नाम में ही जाकर समा जाते हैं। हमें घर-बार, बाल-बच्चे छोड़ने की जरूरत नहीं और न समाज बदलने की ही जरूरत है। हमने सन्तों की बताई हुई नाम की कमाई करके अंदर जाना है, शब्द को प्रकट करना है।

भूल भरम में सब जग पचता। अचरज बात न काहु सुहाय।।

दुनिया भूल में पड़ जाती है, एक महात्मा दस-पंद्रह भ्रम निकालकर जाता है, हम दुनियादार लोग बीस-पच्चीस भ्रम और डालकर बैठ जाते हैं। कबीर साहब ने सारी जिंदगी अंधविश्वास की खातिर बहुत संघर्ष किया। जब कबीर साहब ने अंधविश्वास का खंडन किया उस वक्त के पुजारी लोगों ने वक्त की हुकूमत के साथ मिलकर कबीर साहब को बहुत कष्ट दिलवाए। कबीर साहब की गठरी बनाकर हाथी के सामने फैंका गया लेकिन हाथी ने उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, हाथी को शराब

पिलाकर मस्त किया हुआ था। उस समय मजिस्ट्रेटी काजियों के हाथ में होती थी। कबीर साहब अपनी बानी में लिखते हैंः

क्या अपराध सन्त है कीन्हा, बाँध पोट कुंचर को दीन्हा
कंचुर पोट ले ले नमस्कारे, बूझे नहीं काजी अधियारे
तीन बार पतिया भर लीन्हा, मन कठोर अजे न पतीना

मालिक की मौज, हाथी कबीर साहब को नमस्कार करने लगा फिर भी काजी को समझ नहीं आई। ऐसा खेल तीन बार किया गया लेकिन काजी के मन के अंदर इतनी कठोरता थी कि वह फिर भी मानने के लिए तैयार नहीं था। गुरु नानक साहब कहते हैंः

मनमुख जे समझाईऐ पी औजड़ जाए

आप मनमुख को जितना भी समझा लें वह फिर भी मानने के लिए तैयार नहीं होता। स्वामी जी महाराज के कहने का भाव यह है कि सारी दुनिया भूल में पड़ी हुई है, नाम की कमाई हमें अच्छी नहीं लगती। कबीर साहब ने मूर्ति पूजा और बाहर के कर्मकांडो का बहुत खंडन किया है।

सन् 1947 में जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ, हम आर्मी वालों को पहले प्रधानमंत्री को सलामी देने का मौका मिला। मैं उस वक्त दिल्ली आया, सरकार ने हमें एक महीने की छुट्टी दी और कहा कि इन्हें दिल्ली की मशहूर जगह दिखाएं। दिल्ली की कई मशहूर पुरातन जगह देखी आखिर बिरला मंदिर में भी गए।

सबसे पहले बिरला मंदिर में यह नजारा देखा कि जो आदमी पंडित को एक रूपया देता, पंडित उस आदमी के माथे पर तिलक लगाता और उसके गले में हार पहनाता। वहाँ कुछ विदेशी लोग भी आए हुए थे। एक मेम ने पंडित के आगे एक रूपया रख दिया तो पंडित ने उसके माथे पर तिलक लगाकर उसके गले में हार पहना दिया। मेम ने अपने पति को बुलाया कि वह भी पंडित से तिलक लगवाकर गले में हार डलवा ले।

उसके पति ने तिलक लगवाने के लिए अपना माथा और हार डलवाने के लिए अपना गला पंडित के आगे कर दिया। अब वहाँ मुफ्त में कौन हार पहनाता है? तब उस मेम ने अपने पति को इशारा किया कि वह जेब से कुछ निकालकर पंडित को दे तभी वह हार पहनाएगा। जब उसके पति ने पंडित को एक रूपया दिया तो पंडित ने उसके गले में हार पहनाया और तिलक भी लगाया।

यह सब देखकर जब हम आगे गए, वहाँ कबीर साहब की पत्थर की बनी हुई बहुत बड़ी मूर्ति रखी हुई थी। मैंने उससे आगे उस मंदिर में कुछ नहीं देखा हालाँकि उन दिनों में मुझे महाराज कृपाल नहीं मिले थे लेकिन मैं बचपन से ही अंधविश्वास को नहीं मानता था। जिस महात्मा ने सारी जिंदगी अंधविश्वास का खंडन किया, आज लोग उसी महात्मा की पत्थर की मूर्ति बनाकर पूज रहे हैं। कबीर साहब अपनी बानी में कहते हैं:

कबीर दुनिया बावरी पत्थर पूजन जाए
घर की चक्की कोई न पूजे जाका पीसा खाए

दुनिया कितनी बावरी है, पत्थर की मूर्ति बनाकर उसके आगे नमस्कार करते हैं। जिस चक्की का पीसा हुआ आटा खाते हैं उसे नहीं पूजते, दिल के अंदर उसके लिए सत्कार नहीं। फिर आप कहते हैं:

पत्थर पूजयां रब मिले तो मैं पूजूँ पहाड़

अगर पत्थर पूजने से परमात्मा मिलता है तो इससे सस्ता सौदा और कौन सा है? मैं पहाड़ पूजने के लिए तैयार हूँ, पहाड़ पत्थर का बना हुआ है। महात्मा किसी की निन्दा नहीं करते लेकिन वे यह जरूर बताते हैं कि रूपया सौ पैसे का है। जिस ठाकुर को पूजकर मुक्ति मिलती है, वह अंदर है, वह बोलता है। जब महात्मा यह कहते हैं तो लोगों को अचरज लगता है।

पंडित भेख पेट के मारे वे सन्तन पर करते तान
हितकर सन्त उन्हें समझावें वे मानी नहीं माने आन

पंडित–पुजारी मान–बड़ाई में होते हैं, सन्त उनके साथ भी प्यार करते हैं कि देखो प्यारेयो, अगर आप अंदर जाकर इस तरह करेंगे तो आपको भी ठाकुर मिल जाएगा, वह ठाकुर बोलता है, सबको दान देता है। सारी दुनिया भूल–भुल्लैया में पड़ी हुई है। हर समाज में महापुरुष आते हैं, वे खुद अनुभव प्राप्त करते हैं और जीवों को अनुभव ही देकर जाते हैं। वे अपने ग्रंथों में लिखते भी हैं कि हमने सतगुरु की मदद से अनुभव प्राप्त किया है, आप भी इस तरह करेंगे तो अनुभव को पाएंगे।

जब तक दो चार या दस पीढ़ियाँ नाम का प्रचार करती हैं, उनकी तालीम चलती रहती है। बाद में लोग थ्योरियाँ समझाने लग जाते हैं। अपने मतलब की खातिर बानियों के टीके कर लेते हैं बल्कि उससे ज्यादा शोर मचाते हैं, ऐसा इसलिए होता है कि वहाँ अनुभवी पुरुषों की कमी हो जाती है। परमात्मा फिर अपने प्यारे अनुभवी पुरुषों को भेजता है वे फिर आकर दुनिया को भूल में से निकालते हैं फिर सही संदेश दे जाते हैं कि परमात्मा आपको अंदर मिलेगा, परमात्मा आपकी इंतजार में है।

भागहीन सब जग माया बस। यह निरमल गति कोइ न पाय।।

यह जीव किसके भाग्य लाए? निर्मल गति, निर्मल नाम, प्योर नाम अमोलक है, यह मूल्य देने से नहीं मिलता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नाम अमोलक रतन है पूरे सतगुरु पास
सतगुरु सेवै लगया कढ रतन देवै परगास

जिन पर दया आदि करता की। सो यह अमृत पीवन चाहि।।

ऐसा नहीं कि आज तक किसी ने परमात्मा को पाया ही नहीं। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं, उनके दिल के अंदर यह चाह पैदा होती है। वे अमृत पीकर अमर हो जाते हैं, शान्ति प्राप्त कर लेते हैं।

तानसेन राग का बादशाह था, उसे अकबर के दरबार में खास स्थान मिला हुआ था। अकबर के दरबार में अच्छे विद्वान थे जिन्हें नौ रत्न कहा

जाता था, उन रत्नों में से तानसेन एक था। जिसने राग विद्या सीखनी है वह तानसेन के जूते साफ करेगा, जिसने राग विद्या नहीं सीखनी चाहे तानसेन उसके जूते साफ करे, वह कहेगा, ''मेरी तो यह इच्छा नहीं।''

बड़े-बड़े चोटी के महात्मा आकर होका देते रहे। दस गुरु पातशाह, कबीर साहब, मौलाना रूम, शम्स तबरेज, रविदास, महात्मा तुकाराम, पलटू साहब इस संसार में आए लेकिन संसार की हालत वैसी ही है। हम भूल-भुल्लैया में पड़े हुए हैं। थोड़े से आदमी अपने घर की तैयारी करते हैं।

कहाँ लग महिमा कहुँ इस गति की। बिरले गुरुमुख चीन्हत ताहि।।

मैं इस गति की क्या महिमा बयान करूं? कोई विरले ही होंगे। लाखों में कोई एक-आध ही इस गति को समझता है। महात्मा की कद्र वही करता है जिसके दिल में शौक, विरह और तड़प है।

कोटन में कोउ जो भजन राम को पावे

मैं महाराज सावन सिंह जी के मुत्तलिक बताया करता हूँ, उनके दिल में तड़प थी, उन्होंने बाईस साल गुरु की खोज की। उन्होंने अपनी जिंदगी का कोई पल खोज के बिना नहीं जाने दिया। जब उन्हें गुरुदेव मिले तो उन्होंने यह नहीं किया कि आज का काम कल पर छोड़ दिया हो।

महाराज सावन सिंह जी ने बहुत अभ्यास किया, वे कई-कई रातें अंदर से नहीं निकलते थे। उन्होंने बैरागन बनाई हुई थी, जब नींद तंग करती तो बैरागन पर खड़े होकर अभ्यास करते, भूख-प्यास काटी। एक दिन संगत में कहने लगे कि मैंने कोई कमाई नहीं की, यह सब बाबा जयमल सिंह जी की दया है। उनका रसोईया बन्ता सिंह था, वह महाराज जी की भूख-प्यास का नजारा सदा ही देखता था। उसने कहा, ''महाराज जी, जब आप दो-दो दिन तक खाना नहीं खाते थे, अंदर से नहीं निकलते थे, वह किसकी कमाई थी?'' आप सोचकर देखें, सब कुछ करके भी

सन्त यह कहते हैं कि हम तो किसी काबिल नहीं यह हमारे गुरुदेव की दया है। ऐसा वही कहेगा जिसके दिल में शौक है तड़प है, जिसने अंदर जाकर गुरु की पोजिशन को देख लिया। एक बार वे बीमार हुए तो उन्होंने महाराज कृपाल को स्वामी जी महाराज का यह शब्द सुनाने के लिए कहाः

गुरु मैं गुनाहगार अति भारी।

इस शब्द में शिष्य अपने गुरु के दरबार में गुनाहगार होकर खड़ा है, अपनी नालायकी के रोने रोता है कि मैं कितना पापी हूँ, कितना बुरा हूँ, मैं किसी काबिल नहीं था सब तेरी ही दया है। वह कुलमालिक संसार में आया, वह आज भी हम भूले-भटके जीवों के ऊपर दया कर रहा है। उनके अंदर सच्ची नम्रता और सच्ची चाह होती है।

मैं बचपन से ही जीवित महापुरुष की तलाश में रहा। मैं पिछली कहानियाँ पढ़ता हूँ कि वे जीव कितने भाग्यशाली थे जो गुरु गोबिंद सिंह जी या गुरु नानकदेव जी को मिले। क्या मेरी किस्मत में भी ऐसा होगा कि मुझे कोई पूर्ण जीवित महापुरुष मिलेंगे?

जब परमपिता कृपाल मेरे घर आए तो यह मुझ पर निर्भर था कि मैंने अपना बर्तन कितना बनाया है, मैं उनसे क्या माँगता हूँ? मैंने अपनी जिंदगी में उनसे कोई दुनियावी सवाल नहीं किया। एक छोटे बच्चे की तरह आँखे भरकर यही कहा कि मेरा दिल-दिमाग खाली है। मुझे मेरी जिंदगी में बाबा जयमल सिंह जी के नामलेवा भी मिलते रहे हैं। बाबा जयमल सिंह जी के एक नामलेवा का नाम भी जयमल सिंह था, उसकी उम्र सौ साल से भी ज्यादा थी। वह मेरे आश्रम में आकर दो-चार दिन ठहरता था। उसके अंदर अपने गुरु के लिए कमाल का प्यार था। उसके मुँह से यह भी सुनने को मिलता कि हमने वक्त गँवा दिया, फायदा नहीं उठाया।

प्यारेयो, यह कोई सरकारी सर्विस नहीं कि हमें नाम लिए हुए इतने साल हो गए, हमारा पर्दा खुल जाएगा। सच्चे शिष्य का गुरु के पास जाना

इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को आग के पास कर देते हैं। खुष्क बारूद जब आग के नजदीक होगा तो फौरन धमाका पड़ जाएगा। देने वाले का कसूर नहीं उन्होंने पच्चीस साल होका दिया। गुरु नानक साहब कहते हैं:

विण तुध होर जे मंगणा सिर दुखा कै दुख
दे नाम संतोखीआ उतरै मन की भुख

वह जो दौलत देने के लिए आते हैं, हम भूले हुए दुनियादार लोग उस दौलत को नहीं माँगते, हम अपने दुनियावी रोने रोते हैं। अब आप सोचकर देख लें हम उनसे क्या माँग रहे हैं?

बिन गुरु चरन और नहिं भावे। इस आनँद में रहे समाय।।

जो पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं उन्हें दुनिया के रस अच्छे नहीं लगते, उन्हें गुरु का रस, गुरु का प्यार, गुरु का दीदार ही अच्छा लगता है। इतिहास में आता है जब मौलाना रूम का अंत समय आया तो उनके कुछ सेवक उनका हालचाल पूछने के लिए गए। सेवकों ने बड़े प्यार से कहा, ''परमात्मा, तू इन्हें राजी कर दे।'' मौलाना रूम ने खफा होकर कहा, ''मेरे और परमात्मा के बीच इस जिस्म का पर्दा था, मुझे दिन-रात इस शरीर के साथ काम करना पड़ता था, अगर सन्त अपना कोई काम नहीं करते तो दिन-रात संगत का काम करते हैं। कभी खाली होते तो अंदर मिलाप होता था, आज सदा के लिए मेरा पर्दा टूट रहा है। क्या तुम नहीं चाहते कि मैं सदा के लिए उस परमात्मा में मिल जाऊं, सदा के लिए शान्ति के घर पहुँच जाऊँ?''

दर्शन करत पिंड सुध भूली। फिर घर बाहर सुधि क्या आय।।

ऐसी प्रेमी आत्मा के अंदर दर्शनों की इतनी कद्र होती है, इतनी तड़प होती है कि वे अपनी सुध भूल जाते हैं, उन्हें घर-बार कब याद रहता है? बुल्लेशाह ने कहा था:

वेहड़े वड़ी जद यार दे भुल्ल गई सलामा लेक

जब मैंने अंदर जाकर सच्चखंड में उसे तख्त पर देखा तो मैं उसे सलाम, नमस्ते बोलना ही भूल गई। जब कबीर साहब की नामलेवा इन्द्रमति सच्चखंड पहुँची तो उसने देखा कि कुलमालिक और कबीर साहब एक हैं तो उसने कहा, ''आप संसार में ही मुझे बता देते कि मैं ही कुलमालिक हूँ तो कितना आसान हो जाता।'' कबीर साहब ने कहा, ''तूने यकीन ही नहीं करना था कि यह मेरी तरह ही खाता है, मेरी तरह ही सोता है और मेरी तरह ही बातें करता है, यह किस तरह भगवान हो सकता है।''

यहाँ आकर ही हम सब गलतियाँ करते हैं क्योंकि इंसान, इंसान में बहुत फर्क होता है एक बंदा, बंदा नहीं बनता और एक बंदा भगवान बन जाता है। एक आदमी अपने अंदर बंदा बनने वाली सिफतें ही पैदा नहीं करता और एक नामरूप गुरुओं से मिलकर नामरूप ही हो जाता है।

एक बार परमात्मा कृपाल मेरे आश्रम में बैठे थे, उनके शरीर से किरणें छन–छनकर बाहर आ रही थी। वे जब अपनी मौज में बात करते थे तो आँखे उनके चेहरे पर टिक नहीं रही थी, आँखें उठाते ही प्रकाश निकलता था। उस समय जो आदमी मेरे साथ बात कर रहा था वह भी इस राज का वाकिफकार था। सहेली से सहेली मिले तो वह जरूर बात करती है। हम बात कर रहे थे कि वह मनमोहनी मूरत कितनी सुदंर है, जब यह चली जाएगी तो क्या बनेगा?

मेरा एक दोस्त मौलवी यह सब कुछ सुन रहा था, उसने कहा कि इंसान ही है लेकिन जो कुछ तुम बयान कर रहे हो यह कैसे हो सकता है? मैंने हँसकर उससे कहा, ''किसी ने मजनूं को ताना मारा था कि मजनूं तू जिस लैला से प्यार करता है वह रंग की काली है, तूने उसके लिए अपना जिस्म सुखा लिया है।'' मजनूं ने हँसकर कहा, ''तुम मेरी आँखों में बैठकर देखो कि उसके अंदर कितना हुस्न है।'' मैंने उस मौलवी को

बताया कि गुरु में सुंदर चीज क्या है? जब हमें यह समझ आ जाती है कि गुरु परमात्मा रूप है, ये जो आँखें घूमती हैं इनमें से परमात्मा झाँकता है। परमात्मा ने प्रकट होकर इस तन को पवित्र किया है। जब महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा महात्मा चतुरदास अंदर गए तो उन्होंने कहाः

अक्सर सोहणे हौंण जगत विच, ओहदी शक्ल न्यारी है

उसके अंदर सुंदर चीज परमात्मा प्रकट है, वह घट-घट में व्यापक है, वह नूर है, प्रकाश है। जो अंदर देखते हैं वे उस परमात्मा को देख रहे होते हैं अगर हम बाहर देखते हैं तो वह पाँच तत्वों में है कि यह हमारी तरह खाता-पीता है, बोलता है, चलता-फिरता है। जब हम अंदर जाकर देखते हैं कि कुलमालिक ने उसे अपने घर तख्त पर जगह दी हुई है।

ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी। तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय।।

जिनके तन, मन और आत्मा पर नाम का रंग चढ़ गया, वे अंदर से बोलते हैं तो प्रेम से भरे हुए बोलते हैं, उनके अंदर प्रेम ठाठे मारता है।

सुभर भरे प्रेम रस रंग उपजे चाओ साध के संग

वे परमात्मा के प्यार में लबालब भरे होते हैं, उनकी संगत-सोहबत में जाकर हमारे अंदर भी चाव पैदा होता है, जिस तरह खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ लेता है।

जोग बैराग ज्ञान सब रूखे। यह रस उन में दीखे न ताय।।

आप प्यार से कहते हैं कि योगियों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। योग, दुनियावी वैराग्य और पढ़-पढ़ाई से यह रंग नहीं चढ़ता। पढ़-पढ़ाई से हम थोड़ी बहुत लियाकत पैदा कर लेते हैं, बोलने का तरीका आ जाता है। एक-दूसरे के साथ बहस करने लग जाते हैं कि मेरे जैसा कौन है? गुरु नानक साहब कहते हैंः

लिख लिख पढ़या तेता कढ़या, बहो तीर्थ भवया तेतो लविआ
बहु भेख किया देही दुख दीया, सोवे जीया अपणा किया
अन्न न खाया साद गवाया, बहु दुख पाया दूजा भाया

हम जितना बाहर का रीति–रिवाज करते हैं, चाहे पढ़ते हैं चाहे अखोती राग धारण करते हैं उसमें 'नाम–शब्द' का रस नहीं आता। मैं बाबा बिशनदास जी की एक कहानी सुनाया करता हूँ, बाबा बिशनदास जी अच्छे पढ़े–लिखे साधु थे। वे कहा करते थे कि दो पंडित काशी पढ़कर अच्छी विद्या हासिल करके आए, उनके दिल में ख्याल आया कि अब हम सर्वाजीत हो गए हैं। जो भी बात करेगा हम उसे हरा देंगे क्योंकि आम पढ़े–लिखों के दिमाग में यही चीज होती है कि हमारे साथ कोई बात ही नहीं कर सकता। इसी को स्वामी जी महाराज ने रूकावट बताया थाः

हे विद्या तू बड़ी अविद्या, सन्तन की तें कद्र न जानी

यहाँ बुद्धि बल का क्या काम है। वे पंडित रास्ते में जाते हुए किसी जमींदार के घर रूके। जमींदार ने पंडित समझकर उन्हें खाने का न्यौता दिया। जमींदार अपने घर पर खाना तैयार करवाने लगा। जब उनमें से एक पंडित नहाने के लिए गया तो जमींदार ने दूसरे पंडित से पूछा, ''ये पंडित जी कितने पढ़े–लिखे हैं?'' पहले पंडित ने कहा, ''यह तो बैल है इसे क्या आता है?'' जब दूसरा नहाने के लिए गया तो जमींदार ने पहले वाले पंडित से पूछा, ''ये पंडित जी कितने पढ़े–लिखे हैं?'' उस पंडित ने कहा, ''इसे क्या आता है, यह तो पशु ही है।''

जमींदार ने दोनों पंडितों के आगे पत–पराल रख दिया। पंडित बहुत हैरान हुए। उन्होंने जमींदार से कहा, ''तू हमारे लिए खाना लेकर आ, तूने यह पशुओं का खाना हमारे आगे क्यों रख दिया?'' जमींदार ने कहा कि आप दोनों ने मुझे यह बताया था कि ये बैल है और ये पशु है। मैंने तो आपके कहने पर अमल किया है।

पढ़या इल्म अमल न कीता पढ़या फेर पढ़ाया की

हम वेद-शास्त्रों में लिखी हुई तालीम पर अमल नहीं करते अगर हमने उस पर अमल ही नहीं करना तो हमारे पढ़ने का क्या फायदा? महात्मा ने जो वेद-शास्त्रों में दर्ज किया है उसे समझें और उस पर अमल करें।

हर एक महात्मा ने वेद-शास्त्रों में नाम, सतसंग और सतगुरु की महिमा गाई है। सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती हमारी तहकीकात मुकम्मल नहीं होती और हमें अपनी गलतियों का पता नहीं लगता, नाम के बिना मुक्ति नहीं। जीवित महापुरुष के बिना हमें नाम का भेद नहीं मिलता। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं:

वेद कतेब न भेद लिखयो जो गुरु ने गुर मोहे बतायो

मुझे गुरु ने जो भेद बताया वह वेद-शास्त्रों में नहीं मिला। वेद-शास्त्र अच्छे हैं ये कमाई वाले महात्माओं ने लिखे हैं, ये इज्जत के काबिल हैं। ये हमें वाकफियत देते हैं पढ़ना साधन है मकसद नहीं। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि पढ़-पढ़ाई में नाम-शब्द का रस नहीं है।

बड़ भागी कोइ बिरला प्रेमी। तिन यह न्यामत मिली अधिकाय।।

इंसानी जामा धारण करके किसी विरले भाग्यशाली प्रेमी को गुरु ने दया करके नाम की अमोलक दात प्राप्त करवा दी।

राधास्वामी कहत सुनाई। यह आरत कोई गुरुमुख गाय।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरुमुख ही मेरी इस आरती को समझेंगे। आरती का मतलब आत्मा का परमात्मा में जज्ब होना है, कतरे का समुंद्र में मिलना है।''

स्वामी जी महाराज ने हमें प्यार से बताया है कि हमने इन कर्मों के टैक्स को आसानी से भुगतना है। परमात्मा ने हमें इंसान का जामा दिया है। हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि हमें गुरु मिल गया है, नाम मिल गया है। अब हमारे ऊपर जिम्मेदारी आती है कि हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें। ✻✻✻

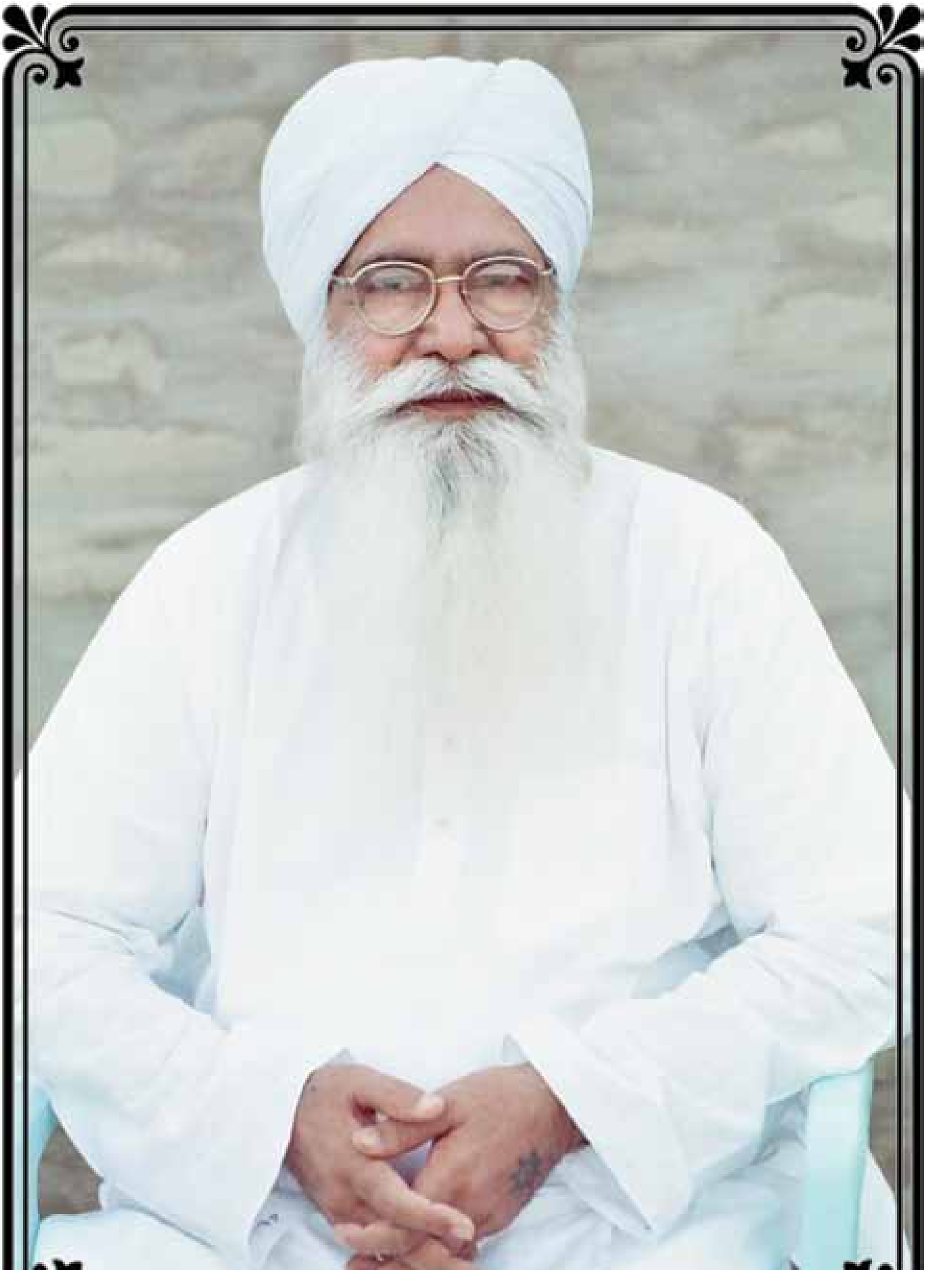

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

भजन अभ्यास का महत्व

3 दिसम्बर 1986, 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

***एक प्रेमीः –** महाराज जी, क्या हम अंतरी मंडलों को बिना शब्द सुने अभ्यास करके पार कर सकते हैं?*

बाबा जीः – हाँ भई, इस बारे में मैंने पहले भी कई बार बताया है, अब फिर बता देता हूँ। नामदान के समय हमें पाँच पवित्र नाम बताए जाते हैं, उनका सिमरन करना बहुत जरूरी है। दुनिया का सिमरन ही हमें बार–बार इस संसार में खींचकर लाता है, यही हमारे जन्म–मरण का कारण बनता है। कोई भी ऐसा इंसान नहीं जिसकी सारी ख्वाहिशें पूरी हो जाएं किसी की दस ख्वाहिशें पूरी हो गई तो चार अधूरी रह जाती हैं। किसी की चार ख्वाहिशें पूरी हो गई तो दस ख्वाहिशें अधूरी रह जाती हैं।

अंत समय में जो ख्वाहिशें अधूरी रह जाती हैं, उन्हें पूरा करने के लिए हमारे अंदर संकल्प–विकल्प उठने शुरु हो जाते हैं, हमारा शरीर वही तृष्णा लेकर फिर जन्म लेता है आगे जाकर फिर वह चीजें आसानी से मिल जाती हैं लेकिन वहाँ और भी कई चीजों की कमी रह जाती है। दुनिया का सिमरन हमें बार–बार दुनिया में खींचकर लाता है।

सन्त हमें सिमरन से फायदा उठाने के लिए बताते हैं। सन्त–महात्मा हमें किसी ग्रंथ या पोथी में से नाम नहीं देते। उन्होंने अपने गुरु का हुक्म मानकर अपनी जिंदगी में नाम की पूरी आराधना की होती है, जिसके पीछे उनकी चार्जिंग होती है। सिमरन को सिमरन ही काटता है। जब हम दुनिया का सिमरन छोड़कर बार–बार पाँच पवित्र नामों का सिमरन करते हैं तो दुनिया का सिमरन भूलना शुरु हो जाता है और जुबान पर सन्त–

महात्माओं का दिया हुआ सिमरन चढ़ जाता है। फिर हम याद करें या न करें, जिस तरह अब दुनिया का सिमरन बिना याद किए ही आता है फिर यह सिमरन भी अपने आप ही आना शुरु हो जाता है।

जब हम किसी चीज को बार–बार याद करते हैं, किसी चीज का बार–बार अभ्यास करते हैं तो उसमें महारत आ जाती है। हमारे अंदर से अपने आप ही दुनिया का सिमरन भूलना शुरु हो जाता है, सन्तों का दिया हुआ सिमरन याद आने लग जाता है और हमारी सुरत तीसरे तिल पर एकाग्र होने लग जाती है। हमारी आत्मा सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार करती हुई गुरु स्वरूप तक पहुँच जाती है, यहाँ तक सिमरन का काम है।

आपको पता है कि हम परिवार में रहते हुए जब किसी जीव को याद करते हैं तो उसकी शक्ल अपने आप ही आँखों के आगे आ जाती है। दफ्तर का काम करते हैं बस, याद करने की देर है वहाँ की फाइलें वगैरह आँखों के आगे घूमने लग जाती हैं। इसी तरह जब हम किसी एयरपोर्ट को याद करते हैं तो हवाई जहाज आँखों के सामने घूमना शुरु कर देता है।

इसी तरह जब हम सन्तों का सिमरन करते हैं तो बस याद करने की देर है कि सन्तों का स्वरूप हमारी आँखों के आगे घूमने लग जाता है। मैले का ध्यान करने से आत्मा मैली हो जाती है, हम नीचे चले जाते हैं। अगर हम किसी अच्छे मालिक के प्यारे का ध्यान करेंगे तो वह स्वरूप हमारे अंदर ठहरना शुरु हो जाएगा। उसके जितने भी गुण है वे धीरे–धीरे हमारे अंदर आने शुरु हो जाएंगे।

दुनिया को मामूली सा याद किए बिना ही रात को दुनिया के स्वपन आते हैं। हम गुरु को इतना याद करते हैं फिर भी गुरु का स्वपन क्यों नहीं आता? इसका कारण यही है कि हमारी आत्मा, मन अभी इतने पवित्र नहीं हुए क्योंकि स्वप्न हमें नौं द्वारो में गिराते हैं। हमारे मन और आत्मा की सीट आँखों के पीछे है। जाग्रत अवस्था में यहाँ हमारे मन और आत्मा

की बैठक है। हम जब सो जाते हैं तो हमारी आत्मा धीरे–धीरे नीचे वाले चक्रों में आ जाती है, वहाँ हमें पूरी बात का पता नहीं लगता। हम कई बार सोचते कुछ हैं और हो कुछ जाता है। रात को भागते हैं, भागा नहीं जाता ऐसी कई बातें होती हैं। इसलिए सन्त कहते हैं कि दुनियादारों को स्वप्न में भी सुख नहीं होता। जब कभी सतगुरु देखता है कि मेरा बच्चा कभी भी ऊपर नहीं आया तो सतगुरु अपनी दया से कभी–कभी हमारी आत्मा को ऊपर के मंडलों में खींच लेता है, हमें उस स्वप्न से बहुत आनन्द और बहुत खुशी मिलती है।

कई प्रेमियों का भजन नहीं बनता लेकिन जब ऐसा स्वपन आता है तो उनका भजन बनना शुरु हो जाता है। कई बार गुरु ऊपर खींचकर चेतावनी भी दे जाता है लेकिन सतसंगी को दुनिया के स्वप्न देखने की आदत है। वह गुरु की दया को स्वप्न समझकर उस फल को गँवा देता है, लोगों को बताना शुरु कर देता है कि मुझे रात को स्वप्न में गुरु दिखाई दिए। आप इसे छिपा लें क्योंकि यह आपके गुरु की दया थी, जिसने आपकी आत्मा को ऊपर खींचा। गुरु कभी भी नीचे वाले मंडलों में आकर दर्शन नहीं देता।

पहुँचे हुए सन्तों ने वेदों–शास्त्रों के अंदर स्वरुप की बहुत भारी महिमा बयान की है। जो सतसंगी आज भी अंदर जाते हैं वे उस स्वरूप को भूल नहीं सकते। जब सतसंगी यहाँ पहुँचता है तो उसके अंदर सोया हुआ प्यार जाग जाता है। आत्मा दुनिया की तरफ से सो जाती है, गुरु की तरफ जाग जाती है। इस स्वरूप की महिमा गाते हुए गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गुर मूरत स्यों लाए ध्यान, ईहाँ ऊहाँ पावहि मान

हम बाहर जो तस्वीर देखते हैं वह बेजान है, सन्त इसका ध्यान करने के लिए मना करते हैं। सन्त, स्वरूप का ध्यान करने के लिए कहते हैं अगर तस्वीर हमारा सुधार कर सकती तो पिछले महात्माओं की भी तस्वीरें थी। जिंदगी को जिंदगी ही बख्श सकती है इसलिए सन्त, गुरु स्वरूप का

ध्यान करने के लिए कहते हैं। यहाँ काल की नगरी में किस तरह मियाँ–बीवी की शक्ल बनाकर एक दूसरे में खज्जत हो रहे हैं, विषय–विकारों को पहल दी हुई है। बहुत से सतसंगी कसम खा लेते हैं कि हम इसके बाद ऐसा कर्म नहीं करेंगे लेकिन छोड़ नहीं सकते। यहाँ पहुँचा हुआ सतसंगी विषय–विकारों को किसी भी कीमत पर खरीदने के लिए तैयार नहीं होता। सच्चाई तो यह है कि उसका मन नूरी औरतों पर भी नहीं डोलता। स्वामी जी महाराज इस स्वरूप की महिमा करते हुए कहते हैः

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जावे हूर परंदरी

अगर कोई अंदर जाकर एक बार मेरे गुरु का स्वरूप देख ले तो वह हूरों की तरफ भी नहीं झाँकेगा। आपको सिमरन का पहला हिस्सा बताया है कि आपको सिमरन गुरु स्वरूप तक ही लेकर जाता है आगे लेकर नहीं जाएगा। ये पाँच पवित्र नाम उन पाँच धनियों के हैं जो इन मंडलों के मालिक हैं। हमारी आत्मा ने ये पाँच मंडल शब्द के जरिए ही पार करने हैं। आत्मा शब्द पर सवार होकर ही सच्चखंड जा सकती है।

सतसंगी को सिमरन की महानता का ज्ञान नहीं, कद्र न होने की वजह से सतसंगी सही ढंग से सिमरन नहीं करता। अगर कभी सिमरन पर बैठता भी है तो दुनिया को याद करने में एक घंटा लगा देता है लेकिन सही तरीके से सिमरन सिर्फ चार–पाँच मिनट ही करता है। मन अंदर से ही कहीं और ले जाता है, अभ्यास से उठकर घड़ी देख लेता है और डायरी में दर्ज कर देता है। मन कहता है कि पता नहीं तूने कितना सिमरन कर लिया है? हमने कभी बारीकी से यह नहीं सोचा कि हमारे गुरु ने हमें अभ्यास के लिए यह पवित्र घंटा दिया था, इसमें हमने कितनी देर सही सिमरन किया। गुरु को याद किया या इस एक घंटे में कितनी देर दुनिया में ही फिरते रहे?

हमें शब्द सुनाई तो देता है लेकिन खींच नहीं रहा क्योंकि हमारी आत्मा नौं द्वारों में बंधी हुई है। शब्द ऊपर से आँखों तक ही आ रहा है

अगर हम सिमरन करके नौं द्वारे खाली करके अपने ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं तो यह शब्द की रेंज में आ जाती है। शब्द इसे ऊपर खींचकर एक मंडल से दूसरे मंडल में ले जाता है। हमारी आत्मा पर स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीन पर्दे हैं। जब हम अभ्यास करते हैं, पहले मंडल सहँस दल कमल तक पहुँचते हैं तो हमारी आत्मा से स्थूल पर्दा उतर जाता है। जब हम दूसरे मंडल पर पहुँचते हैं तो सूक्ष्म पर्दा उतर जाता है। जब तीसरे मंडल–दसवें द्वार पर पहुँचते हैं तो वहाँ कारन पर्दा भी उतर जाता है।

फिर हमारी आत्मा को पता लगता है कि न मैं औरत हूँ, न मर्द हूँ, न हिन्दुस्तान की रहने वाली हूँ, न अमेरिका की रहने वाली हूँ। आत्मा, आत्मा ही है। उस समय इसे अपने घर की समझ आती है। जब हम बाहर बैठे हैं तो गुरु स्थूल शरीर में हमें हमारे सवालों का जवाब देता है। जब हम सूक्ष्म देश पहली मंजिल पर जाते हैं तो गुरु शब्द रूप है जो हमें ऊपर खींचने का काम करता है। जब हम दूसरी मंजिल पर जाते हैं गुरु उस समय सार शब्द हो जाता है। जब हम तीसरी मंजिल पर जाते हैं गुरु उससे भी प्योर सच्चा शब्द नजर आने लग जाता है। जैसे–जैसे हम ऊपर जाते हैं, सच्चखंड में सार शब्द गुरु हमें दर्शन देता है फिर पता लगता है कि गुरुमत क्या चीज है? मैंने पहले भी बताया था कि सन्तमत परियों की कहानियाँ नहीं, यह सच्चाई है कोई भी करके देखे।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि आप जब तक बाहरमुखी हैं कभी मन आपको भरोसा बंधने देगा, कभी तोड़ देगा। कभी कहेगा कि एक बंदा भगवान कैसे हो सकता है? कभी कहेगा कि यह भगवान ही है। बाहर यह हमें हमेशा ही खुष्क किए रखता है अगर हम अंदर जाकर एक बार शब्द गुरु को प्रकट कर लें तो चाहे सारी दुनिया एक तरफ हो जाए हमारा ख्याल नहीं डोलेगा। सन्त बुल्लेशाह ने भी ऊपर के मंडलों में जाकर कहाः

मौला आदमी बन आया

गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सतगुरु को मानुख का रूप न जान

अजायब ने भी अपने गुरु कृपाल की दया से अंदर जाकर यही कहाः

रब बंदा बनके आया

जब मेरे गुरुदेव ने इस संसार से अपना चोला बदला तो संगत में शोर मच गया कि कृपाल मर गया है। लोग जायदाद के लिए कोर्ट में चले गए लेकिन अजायब ने बाँह खड़ी करके कहा, ''जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है, उन्हें कोर्ट में खड़ा करके उनसे पूछा जाए कि आपने जन्म–मरण वाला गुरु क्यों धारण किया? जिनका गुरु ही जन्म–मरण में लगा हुआ है तो चेला कैसे मुक्त हो सकता है?'' कबीर साहब कहते हैंः

गुरु करया है देह का सतगुरु चीन्हा नाहें
लख चौरासी धार में फिर फिर गोता खाहे

सन्त कहते हैं कि आप जल्दी ही अपने शरीर से ऊपर उठें। देखें! आप क्या हैं? वह अपने साथ नहीं शब्द गुरु के साथ बाँधते हैं। वे कहते हैं कि आप सन्तों की देह से ऊपर उठें, शब्द को पैदा करें, शब्द को प्रकट करें फिर आपको पता लगेगा कि गुरु क्या ताकत रखता है, गुरु किस देश से आता है? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सतगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाए
ओह अबिनासी पुरख है सब मह रेहा समाए

सन्त इस दुनिया में अपनी ताकत का इजहार नहीं करते। वे अपने सेवकों से भी कहते हैं अगर सतगुरु आपके ऊपर दया करता है तो आप इसे छिपाकर रखें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

इंसानी जामा एक हीरा

एक आदमी ने वरुण देवता की बहुत कठिन तपस्या की। वरूण देवता ने खुश होकर उसे बहुत कीमती हीरा दिया। उस आदमी ने हीरे को अपनी गुदड़ी में सिल लिया, वह गुदड़ी को हमेशा अपने पास रखता।

एक बार वह कहीं जा रहा था, रास्ते में उसे चार–पाँच ठग मिले उन्होंने देखा कि यह आदमी देखने में तो गरीब सा ही लगता है लेकिन बहुत खुश नजर आ रहा है, इसके पास जरूर कुछ है। उन ठगों ने उससे पूछा, ''भ्रावा, तुझे किस तरफ जाना है?'' उस आदमी ने कहा कि मैं पूर्व की तरफ से आ रहा हूँ और मैंने पश्चिम की तरफ जाना है। उनमें से एक ठग कह–कहाकर हँसा, ''परमात्मा जब मेल मिलाता है तो अपने आप ही इंतजाम कर देता है, यह तो अपना ही साथी निकला, हमने भी उसी तरफ जाना है।'' वे ठग भी उसके साथ चल पड़े।

वह गरीब आदमी अपनी गुदड़ी को संभालता रहा कि इसमें कीमती हीरा है और मैं इन लोगों को नहीं जानता। ठगों को समझ आ गई कि इसकी गुदड़ी में ही कुछ है। एक दिन ठगों ने उस गरीब आदमी को एक टका देकर कहा कि तू बाजार जाकर सौदा लेकर आ। वह बाजार गया तो अपनी गुदड़ी साथ ले गया। जब वह सौदा लेकर आया तो उन ठगों ने हिसाब करके बताया कि बनिए ने तुझसे एक कौडी ज्यादा ले ली है, तू वह लेकर आ कहीं बनिया मुकर न जाए।

वह गरीब आदमी जब भागकर बनिए के पास जाने लगा तो उन ठगों ने कहा कि तू यह गुदड़ी यहीं पर रख जा, तुझे भागकर जाने में दिक्कत होगी। गरीब आदमी जल्दबाजी में वह गुदड़ी वहीं पर छोड़ गया कि कहीं

बनिया मुकर ही न जाए। गरीब आदमी ने जब बनिए के साथ हिसाब किया तो हिसाब ठीक निकला। जब वह भागकर वापिस आया तो वहाँ पर न ठग थे न उसकी गुदड़ी थी। वह बहुत पछताया और रोकर कहने लगाः

बहुत बरस तप साध के मिलया हीरा एक
कौडी बदले खो दिया ते होया कलेजे छेक

जिस तरह उस गरीब आदमी ने भक्ति करके वरूण देवता से हीरा प्राप्त किया उसी तरह जब हम कई जन्मों में भक्ति करते हैं तो परमात्मा हमें **इंसानी जामा एक हीरा** जन्म देता है। यहाँ हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के ठग मिल जाते हैं, ये ठग हमें फँसा लेते हैं फिर हम इन ठगों से छूट नहीं सकते। शुरु-शुरु में ये बड़े प्यार से दोस्ती करते हैं। काम कहता है कि हम औलाद ही पैदा कर रहे हैं कोई गलत काम नहीं कर रहे, औलाद तो ऋषि-मुनि भी पैदा करते आए हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मरे बिना तुम छूटे नाहीं, जीवत जी तू सुने न कान

जब तक हम मरते नहीं ये ठग हमारी जान नहीं छोड़ते। जिस तरह ठगों ने उस गरीब आदमी से हीरा छीन लिया था, उसी तरह हमारी आत्मा भी गरीब है, नाम हीरा है। ये ठग इसे लूट लेते हैं, तरक्की नहीं करने देते। सतसंगी रोता-पीटता कहता है कि अब मुझे प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा, मेरी चढ़ाई नहीं हो रही।

इस कहानी का तात्पर्य यही है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इस नाम रूपी हीरे को ठग लेते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, दया की, भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया।

जब हमने यहाँ से अमेरिका, कनाडा, कोलम्बिया या किसी भी मुल्क में जाना है या हिन्दुस्तान में आना है तो हम वहाँ जाने के लिए टिकट खरीद लेते हैं, उस समय हमारे दिल में तसल्ली हो जाती है कि अब हम अपनी मंजिल की तैयारी कर रहे हैं।

जब हम जहाज में बैठ जाते हैं तो हमें पूरी तरह तसल्ली हो जाती है कि अब हम अपनी मंजिल पर पहुँच जाएंगे। उसके बाद पायलट और कंपनी वालो की जिम्मेदारी होती है। कबीर साहब कहते हैं:

भक्ति निशानी मुक्ति की सन्त चढ़े सब धाए
जिन जिन मन आलस किया जन्म जन्म पछताए

जब हम भक्ति करने लग जाते हैं तो हमारे अंदर परमात्मा से मिलाप की आशा बंध जाती है। जो लोग आलस करते रहते हैं, वे जन्मों-जन्मांतरों तक पछताते रहते हैं। जिस तरह किसी ने टिकट तो खरीद लिया लेकिन वह जहाज में जाकर न बैठे तो वह किस तरह अपनी मंजिल पर पहुँचेगा?

हाँ भई, आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरु करें।

***

धन्य अजायब

सतसंग के कार्यक्रमों का विवरण :-

1	03 मार्च–05 मार्च 2023	शुक्रवार से रविवार	16 पी.एस. आश्रम
2	17 मार्च–19 मार्च 2023	शुक्रवार से रविवार	पठानकोट (पंजाब)
3	31 मार्च–02 अप्रेल 2023	शुक्रवार से रविवार	16 पी.एस. आश्रम

भजन माला - 2022

(नए भजन)

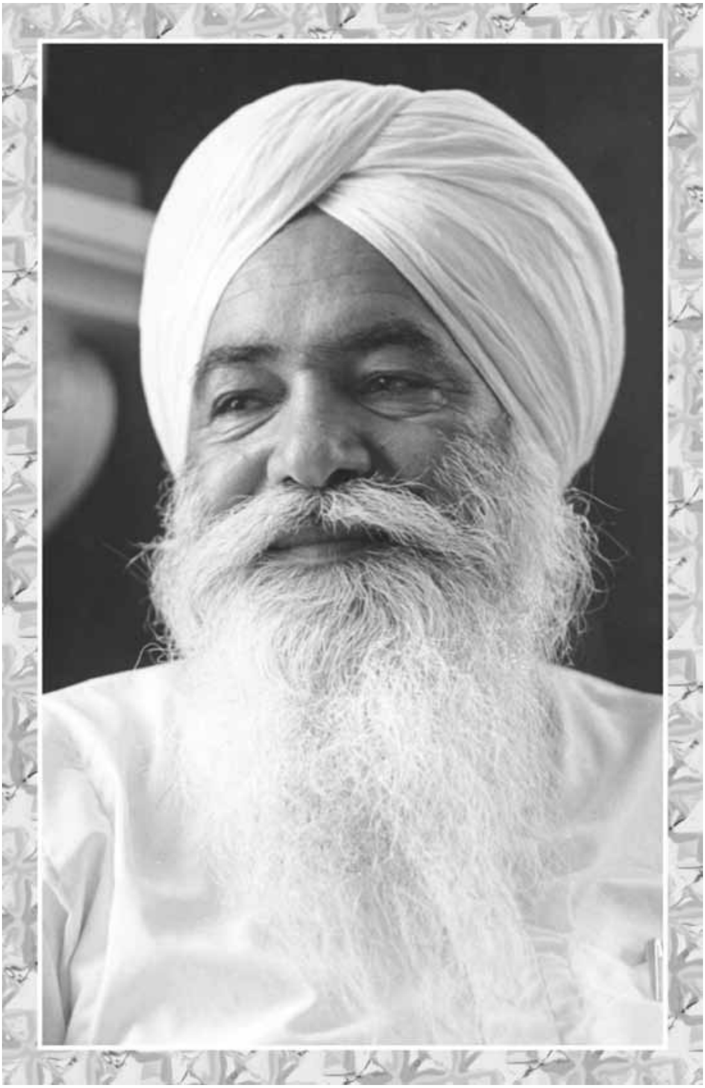

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

की कहां ते किस मुँह नाल आखां

की कहां ते किस मुंह नाल आखां
बक्श दे सतगुरु अैब मेरे x 2
की कहां ते किस........

1 किथों शुरू करां की आखां, समझ ना आवे मैनूं जी,
बेहिसाब ने अवगुण मेरे, किंझ सुणावां तैनूं जी x 2
कैंदया दाता लजया आवे x 2 किंझ आख सुणावां तैनूं जी,
की कहां ते किस........

2 भुलया हां मैं जीव निमाणा, चढ़ गया मन दे हत्थां विच,
भुलया तेरा सिमरन दाता, पै गया मंदड़े कम्मां विच x 2
तकां हुण किस मुंह नाल दाता x 2 तेरियां सोहणियां अखां विच,
की कहां ते किस........

3 हर इक अैब मेरे विच दाता, लम्बी लिस्ट गुनाहां दी,
फोलीं नां कोई वरका इस चों, हथ जोड़ कुरलावां जी x 2
कज्ज लवीं तूं परदा दाता x 2 जिवें अज तक कज्जया जी,
की कहां ते किस........

4 पाड़दे वरके दाता मेरे, कीते खोटेयां कर्मां दे,
दया बणी रहे बस दाता, मेरे जेहे बेशर्मां ते x 2
बक्श दे बक्शणहार कहावें x 2 कोई नमक ना छिड़के जख्मां ते,
की कहां ते किस........

5 अजायब सतगुरु दाता तूं हैं, तूं ही लाज रखावेंगा,
अैबां भरे 'गुरमेल' पापी नूं, तूं ही चरणी लावेंगा x 2
चरणी डिगयां पापीयां नूं दाता x 2 तूं ही पार लगावेंगा,
की कहां ते किस........

मुद्दत होई यार विछ्ड़ेयां पा फेरा

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा,
रूल गए विच संसार विछड़ेयां पा फेरा,

1 होई कोंण खुनामी, जो तूं मुड़ेया इ ना x 2
तरले ओसियां पाए, तूं ते सुणेया इ ना,
आजा आजा आजा x 2 मुड़ेया पा फेरा,
मुद्दत होई यार ....

2 लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे x 2
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता x 2 बझदा ना ज़ेरा,
मुद्दत होई यार ....

3 मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है x 2
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य x 2 जे धरजां मैं ज़ेरा,
मुद्दत होई यार ....

4 हिम्मता टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया x 2
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे x 2 पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार ....

5 रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा x 2
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके x 2, बैह जा इक वेरां
मुद्दत होई यार ....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी		उम्रां तां लंघ चलियां.....

1	दु:ख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे x 2
सोहणेया दर्श बिना चैन नहीं औंदा वे x 2
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी	उम्रां तां लंघ चलियां.....

2	दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे x 2
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सी रोए वे x 2
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी	उम्रां तां लंघ चलियां.....

3	तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी x 2
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी x 2
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी		उम्रां तां लंघ चलियां.....

4	मसां मसां जिंदड़ी तें प्यार विच रंगी वे x 2
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे x 2
बण सजण तू डोली मेरी चा जी		उम्रां तां लंघ चलियां.....

5	समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी x 2
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी x 2
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी		उम्रां तां लंघ चलियां.....

6	प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावे तूं x 2
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं x 2
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी	उम्रां तां लंघ चलियां.....

दु:ख कीनूं दस्सां

दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया
दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां

1 भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दु:ख दातेया x 2
करां अरजोई x 2 तेरे ताई मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता......

2 जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं x 2
छड दित्ता जित्थे x 2 ऐह फानी संसार आ
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता......

3 संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया
दु:खां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया x 2
झाक इक वारी x 2 मेरे वल मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता......

4 खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने x 2
जख्मी है दिल x 2 तन रोगां ने है खा लया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता......

5 सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया x 2
रख लै तूं रख x 2 पत्त मेरी ओ दातारेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता......

दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां

दाता तेरियां रूहा तेरे दर आ गईयां x 2
बख्श देयो मेहर करके दु:खड़े असी सह रहियां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

1 आजा कोले बैठ असाडे दिल दियां गल्लां करिए
दु:ख–सुख दर्द सुनेहे सजणा तेरे कोले कहिऐ x 2
बात नी साडी पुछदा कोई, तेरे दर हुण आ गईया
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

2 वक्त गवाया गल्ली बाती गफलत दे विच आके
पाप कमाए बहुते सारे मन दे कहणे आके x 2
बहुत हो गया काल पसारा, तेरे चरणी पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

3 दु:ख वी है ते गिला वी दाता तेरे विछोड़े ताईं
आ ईक वारी गल नाल ला ले छड्डु न मुड़ तूं जाईं x 2
रो लए सारी उम्र बथेरा, वापस घर नूं आ गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

4 कहे 'अजायब' सुण कृपाल प्यारे तेरे वारे जाईऐ
तक्क ले साडे वल्ल प्यारे पार उतारे पाईऐ x 2
बख्श दे दाता अवगुण साडे, सी माड़े कर्मी पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

1 तू ही मेरी झोली दे विच खैर प्यार दी पाई
प्यार दी तेरी ईक बूँद मेरी सगली होंद रोशनाई, x 2
आप ही हुण इस रोशन रूह नूं x 2 पैरां हेठ न रोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

2 तन वी तेरा देणदार है रूह वी है करजाई,
तन हुण मेरा रोगां खादा रूह वी फिरे घबराई x 2
हुण इस मन दे झखड़ा अगे x 2 रह न सकां अडोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

3 अजे वी चेते दे तल उत्ते तेरा ही परछावां
की होया जे बदल गया है तेरा वे सिरनावां x 2
किद्दर जावां किद्दर लब्बां x 2 फिरदी हां अनभोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

4 अजे वी ख्वाबां दे विच जगदे याद तेरी दे दीवे,
साह तेरे दी धड़कन अजे वी हिक मेरी विच जीवे x 2
राह तक तक मैं ओसियां पावां x 2 काग बुलावा कोल,
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

5 'अजायब' मन दी मिट्टी उत्ते उकरे रोसे हासे
कन्ना दे विच अजे वी गूंजण कृपाल दे बोल पतासे x 2
मैं सुहागण तेरा राह वे तकदी x 2 हुण आ दरवाजा खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल
दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात x 2
क्यों ना सुने गुरु की बात, x 2
मन मेरे क्यों ना.....

1 सारा दिन, अहंकार में रहता
गुरु का सिमरन, तू नहीं रटता x 2
काहे का करे अहंकार,
मन मेरे क्यों ना.....

2 पाँच विषयों में, हर पल खेले
दिखावे के हैं, हम गुरु के चेले x 2
कुछ तो सोच विचार,
मन मेरे क्यों ना.....

3 बातों में सबसे, बड़ा सतसंगी,
सच में तो है, तू पाखंडी x 2
कभी तो बन मेरा यार,
मन मेरे क्यों ना.....

4 सेवा करे तो, मन की मत से,
मतलब नहीं, तोहे गुरु की संगत से x 2
खुश किसको करे मेरे यार,
मन मेरे क्यों ना.....

5 कबूल गुनाह, अपने गुरु के आगे,
डर के जिससे, काल भी भागे x 2
'अजायब', कर कृपाल से प्यार,
मन मेरे क्यों ना.....

RNI No - RAJHIN/2003/9899

सन्त जीवों को अपने साथ नहीं जोड़ते वे गुरु के साथ, नाम के साथ जोड़ते हैं। यह देह एक कपड़ा है, असली गुरु 'शब्द-नाम' है। सन्त 'शब्द-नाम' में से आते हैं, जब तक प्रभु का हुक्म होता है नाम का प्रचार करके नाम में ही जाकर समा जाते हैं।